17 फरवरी 2023, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:30 से 7:00 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 22
फरवरी (द्वितीय), 2023 (वीर नि. संवत्-2549)
संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

एक नए उत्साह के साथ...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट धूमधाम से मनाने जा रहा है....

11 वाँ वार्षिकोत्सव महामस्तकाभिषेक

दिनांक
शुक्रवार, 24 फरवरी से रविवार, 26 फरवरी 2023 तक

2012 में आयोजित पंचतीर्थ जिनालय के ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के ग्यारहवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में त्रि-दिवसीय समारोह का भव्य आयोजन अनेक मांगलिक अनुष्ठानों सहित किया जा रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के **ना बदलकर भी बदलना विषय पर लाइव प्रवचन**

आध्यात्मिकसत्पुरूष श्री कानजीस्वामी एवं अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के **प्रवचनों का प्रसारण**

द्रव्यसंगह व योगसार मण्डल विधान का **भव्य आयोजन**

बहुचर्चित कृति ''भरत का अंतर्द्वन्द्व'' की **नृत्य नाटिका की प्रस्तुति**

महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों द्वारा **द्रव्यसंग्रह विषय पर संगोष्ठी**

वैराग्य महाकाव्य पर आधारित **वैराग्य नाटक का मंचन**

विद्वत्-समागम

तत्त्ववेता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर
पण्डित अरुणजी शास्त्री, बण्ड
डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली
पण्डित बिपिनजी शास्त्री, मुम्बई
श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल
डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी, भारिल्ल
पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर
डॉ. दीपकजी शास्त्री, जयपुर
डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ
पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर

पंचतीर्थ व सीमंधर जिनालय के जिनबिम्बों का **महामस्तकाभिषेक**

सुप्रसिद्ध गायक संजीवजी उस्मानपुर के द्वारा **आध्यात्मिक भजन संध्या**

महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा **शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता**

परमागम ओनर्स का **वार्षिक विशेष कार्यक्रम**

दैनिक कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी पृष्ठ क्रमांक 07 पर प्रकाशित की गई है।

इस अवसर पर आयोजित समस्त कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण **PTST** के यूट्यूब चैनल के माध्यम से किया जा रहा है आप सभी घर बैठे भी इस कार्यक्रम का इष्ट मित्रों सहित अवश्य लाभ ले सकते हैं।

अरे भिखारी! तू अपने आप को भगवान का भक्त कहता है?

– परमात्म प्रकाश भारिल्ल (सह–सम्पादक)

अरे भाई! जरा अपने मन को तो टटोल!

तू समझता है कि मैं भगवान की भक्ति कर रहा हूँ और भगवान का मुझसे बड़ा भक्त कोई भी नहीं है।

पर क्या यह सच है? क्या तू भ्रम में नहीं है? क्या तू अपने आपको ही उल्लू नहीं बना रहा है (या है)

अरे भाई! तू जब भी भगवान के दर्शन करने जाता है, कोई न कोई चाहत लेकर ही जाता है। यही नहीं, सदा ही भगवान से तेरा नाता **एक याचक और दाता** का ही तो रहता है, जब भी तुझे कोई आवश्यकता होती है तभी तुझे भगवान की याद आती है।

भगवान की भक्ति, पूजन और दर्शन के पीछे तेरा अभिप्राय सदा ही किसी अभिलाषा की पूर्ति का ही रहता है। और तो और, यदि हम भगवान के दर्शन करके मंदिर से लौटते हैं तो हर कोई बस एक ही सवाल तो पूछता है कि – **भगवान् से क्या माँगा?**

क्या कभीभी हमने भगवान को किसी और रूप में भी याद किया है? बस एक ही बात –

- **वह सर्वशक्तिमान है।**
- **वह बड़ा दयालु है।**

यदि वह दयालु है, तो उसके बनाए जगत में इतने दुःख–दर्द क्यों हैं? यदि वह ही सबकुछ करता है; तब फिर दुनिया में वह सबकुछ हो क्यों नहीं जाता है, जिसकी जरूरत है?

जब सबकुछ उसी का किया धरा है तो फिर शिकायत क्यों व किससे? तब क्या तू भगवान की मर्जी के विरुद्ध आचरण करना चाहता है?

क्या तुझे भगवान से वैसी ही शिकायत है जैसी शासकों और सरकारों से होती है?

यदि वह कुछ भी कर सकता है; तब करता क्यों नहीं? क्या दुनिया परिपूर्ण हो चुकी है, क्या इसमें कोई कमी है ही नहीं, क्या अब कुछ भी करने को बाकी नहीं रहा? या क्या वह दयालु और सर्वशक्तिमान भगवान इस बात का इंतजार कर रहा है, कि कोई **किस्मत का मारा, दुखियारा आवे, भीख मांगे, गिड़गिड़ाए, मस्का (मक्खन) मारे, मन्नत माँगे, बदले में कुछ देने का ऑफर करे (शायद इसी को तो रिश्वत कहते हैं)** तब कुछ करूँगा।

उसकी मर्जी के बिना तो पत्ता भी नहीं हिलता है; तब फिर दुनिया में इतना **अन्याय, अनीति, अत्याचार, झूठ, हिंसा, चोरी, कुशील और दुःख–दर्द क्यों है?** दुनिया में इतने नास्तिक क्यों हैं, ईशनिन्दा क्यों होती है?

हम उसे याद करें, उसकी पूजा करें, भक्ति करें, उससे याचना करें, भीख माँगे, मन्नत माँगे यानि उससे सौदा करें, उसे प्रलोभन दें; तब वह खुश हो जाएगा? किसी रिश्वतखोर सरकारी बाबू जैसा?

तब वह हमारे प्रतिद्वंद्वी के विरूद्ध हमें सहायता करेगा? चाहे प्रतिद्वंद्वी का पक्ष सही हो और हमारा गलत, तब भी? जो उसके दरबार में नहीं जाएगा, मन्नत नहीं मांगेगा, वह सही होते हुए भी हार जाएगा? बस यही एक रिश्ता है न तेरा भगवान से?

अरे! भगवान के तेरे जैसे तथाकथित भक्त तो सभी हैं न! जब दो, एक से एक बड़े भक्त परस्पर विरुद्ध मन्नतें माँगे, तब भगवान क्या करेंगे? किसकी सुनेंगे, किसकी नहीं। यदि एक की सुनेंगे–मानेंगे तो दूसरा असंतुष्ट और दुःखी होगा। इसप्रकार भगवान की भक्ति, पूजा, अर्चना और याचना हमारी सफलता की गारंटी नहीं तो वह किस काम की?

यहाँ कुछ भी निश्चित नहीं, अत्यंत अनिश्चितता?

भगवान के दरबार में कोई नियम–क़ानून है या नहीं, कोई ठिकाना है या नहीं?

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा कोई नियम तो होगा न कि –

– यदि ऐसा किया जाए तो ऐसा होगा।

– यह चाहिए तो इस कीमत पर मिलेगा।

– एप्लीकेशन लगाने के बाद काम इतने दिन में हो ही जाएगा।

– क्या इस बात की गारंटी है कि भगवान एक बार आश्वासन देकर या सौदा होजाने पर फिर बदल नहीं जायेंगे। यदि आपने एक बार, एक अमुक कीमत पर किसी वस्तु का सौदा कर लिया तो फिर दूसरा आकर उसी वस्तु की कितनी भी अधिक कीमत दे और वह कितना भी अधिक प्रभावशाली या अपने निकट का व्यक्ति क्यों न हो, आपका सौदा कैंसिल नहीं होगा?

चलो अब एक और स्थिति की कल्पना करें –

पहिले आपने सौदा कर लिया, फिर आपका प्रतिद्वंद्वी आकर मिन्नतें करे, मन्नतें माँगे, आपसे बड़ी कीमत चुकाए, तब क्या होगा, क्या भगवान बदल जायेंगे? **यदि हाँ, तो क्या वे भी हमारे जैसे ही बेईमान हैं?**

यदि नहीं बदलते हैं तो इसका मतलब है कि मन्नतों की कोई कीमत नहीं, मन्नत मांगने वाले हर व्यक्ति का काम हो ही जाए यह जरूरी नहीं, हो भी या न भी हो। यह तो **Offer Valid till Stock Available** जैसी बात है, तब साधारण दुकानदार और भगवान में फर्क ही क्या रहा? सुनिश्चित कीमत चुकाने के बाद भी काम न हो, वस्तु न मिले, तब क्या भगवान और क्या इंसान? किसी बात की कोई गारंटी नहीं, ठिकाना ही नहीं, कोई कारण कार्य सम्बन्ध ही नहीं, ऐसे में कोई कैसे भरोसा करे?

क्या पहिले आओ–पहिले पाओ का फार्मुला लागू होता है या जो ज्यादा बड़ी बोली (मन्नत) लगाएगा, वह पायेगा या जिसकी सिफारिश बड़ी होगी, उसकी बात सुनी जायेगी या जब जैसा मूढ़ हुआ, मन चाहा वैसा कर दिया या टॉस करके निर्णय कर लिया जाता है? **(शेष पृष्ठ 7 पर..)**

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में संचालित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय

सत्र 2023-24 प्रवेश प्रारम्भ

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

- सन् 1977 से 46 वर्षों का गौरवशाली इतिहास।
- पूर्णतः धार्मिक परिवेश होने से संस्कारशील धर्मनिष्ठ बालक।
- छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास।
- महाविद्यालय में प्रवेश पाकर सर्वांगीण विकास का अवसर।
- जैनदर्शन का अधिकारी विद्वान बनकर परिवार व समाज की उन्नति में अग्रसर।
- छात्रावास में रहने से हिताहित का निर्णय करने में छात्र स्वयं समर्थ।
- विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहने से पूरी भारतीय संस्कृति का ज्ञान।
- औसतन प्रतिवर्ष आयोजित परीक्षाओं में उच्चतम स्थान।
- संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध।

"क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो?
यदि हाँ तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को अवश्य प्रेरित करें।"

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

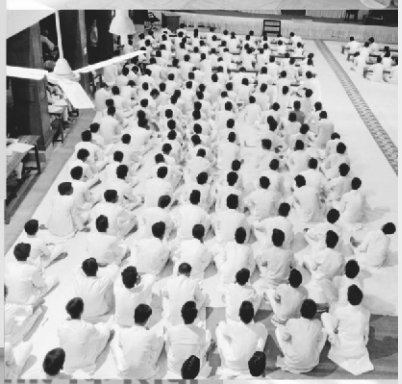

प्रवेश हेतु संपर्क करें :– पण्डित जिनकुमार शास्त्री 8903201647 पण्डित गौरव शास्त्री 7976944699

रजि.नं. A803(N)

तीर्थधाम ज्ञानायतन के तत्त्वावधान में

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

नेहरू पुतला, इतवारी, नागपुर, (महा) 440002

भारत देश की हृदयस्थली नागपुर में 15 वर्षों से शुद्ध तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अग्रणी संस्थान

साक्षात्कार शिविर :- शुक्रवार, 14 अप्रैल से रविवार, 16 अप्रैल 2023

महावीर विद्या निकेतन सिंहावलोकन

- सातवी से दसवी तक की सर्वोत्तम अध्यापन व्यवस्था
- लौकिक अध्ययन के साथ धार्मिक एवं नैतिक संस्कार
- अंग्रेजी तथा सेमी अंग्रेजी के माध्यम से लौकिक शिक्षा
- अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि विषयों की अनुभवी शिक्षकों द्वारा कोचिंग
- व्यक्तित्व विकास के साथ शारीरिक विकास हेतु विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताऐं
- शैक्षणिक एवं धार्मिक यात्रा
- उत्तम सुविधाओं से युक्त संकुल
- विशिष्ट विद्वानों का समागम

*** प्रवेश-प्रक्रिया ***

सातवी कक्षा में प्रवेश इच्छुक छात्र 31 मार्च 2023 तक अपने प्रवेश फॉर्म कार्यालय में जमा करा देवें।

*** साक्षात्कार शिविर ***

14 अप्रैल से 16 अप्रैल तक

(छात्र को अभिभावक के साथ शिविर में उपस्थित रहना अनिवार्य है।)

संपर्क सूत्र

मंत्री	निर्देशक	संयोजक	उपसंयोजक	प्राचार्य	प्रबंधक
अशोक कुमार जैन	डॉ. राकेश शास्त्री	नरेश जैन	विशाल मोदी	पं. विनीत शास्त्री	पं. सुदर्शन शास्त्री
8788663913	9373005801	9373100022	9822700944	8439222105	9403646327

अधीक्षक : पं. भूषण शास्त्री 8857868455 | पं. मोहित शास्त्री 8239450359 | पं. अतिशय शास्त्री 8824230123

Online फॉर्म भरने के लिए इन नंबरों पर संपर्क करे।

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा
पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द–कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें :

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्ययन ।
- पूज्य गुरुदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर ।
- छठवीं से दसवीं तक अध्ययन की सुविधा ।
- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार ।
- समय–समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम ।
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल । • शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान ।
- सभी सुविधायें पूर्णतः निःशुल्क । • लगभग सभी खेलों की सुविधा
- योगा क्लास । • इंग्लिश स्पीकिंग । • कम्प्यूटर क्लास । • म्यूजिक क्लास
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन ।
- प्रतिवर्ष शैक्षणिक तीर्थ यात्रा । • विशाल पुस्तकालय की सुविधा ।
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें । • छठवीं कक्षा में प्रवेश ।
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास ।

प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 31 मार्च 2023

कहान शिशु विहार

राजकोट रोड, सोनगढ़, जि.भावनगर, सौराष्ट्र गुजरात
फोन : 02846–244510, सोनू शास्त्री : 9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519
विराग शास्त्री : 9300642434, प्रियम शास्त्री : 9887986898
आप प्रवेश फार्म हमारी वेबसाइट : www.kahanshishuvihar.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं ।

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

गतांक से आगे...

तृतीय अध्याय

(दोहा)

किया भरत ने प्रथम ही, णमोकार का जाप।
फिर निज आतमध्यान धर, मेटे सब सन्ताप।।1।।

ऋषभदेव जिनराज को, वन्दन बारम्बार।
फिर सब अपने काम में, लगा सभी दरबार।।2।।

(वीर)

सारा दरबार उपस्थित है सब अपने–अपने आसन पर।
और सभी के मध्य विराजे भरतराज सिंहासन पर।।
मंगलाचरण का पाठ सभी जन सबसे पहले करते हैं।
श्री ऋषभदेव के चरणों में वन्दन अभिनन्दन करते हैं।।3।।

अन्दर से इकदम शान्त भरत सबको समझाने लगते हैं।
श्री ऋषभदेव के नन्त गुणों के गाने गाने लगते हैं।।
श्री ऋषभदेव के दिव्यज्ञान की गौरवगाथा गाते हैं।
वृषभेश्वर की वीतरागता का स्वरूप समझाते हैं।।4।।

'ऐसा ना हो, अर ऐसा हो' – ऐसा कुछ भाव न उनको है।
जो कुछ जैसा हो रहा जहाँ वे सहज जानते रहते हैं।।
जिसको जैसा है भाव सहज वे उसे जानते हैं पूरण।
उसकी रग–रग को पहिचानें गहराई जानें संपूरण।।5।।

सबके सभी परिणमन उनके सहज ज्ञान में हैं आते।
पर उनके दिव्यज्ञान को वे सब नहीं तरंगित कर पाते।।
कोई भी घटना दुर्घटना ना उनको आकुल करती है।
रे उनका ज्ञान जलोदधि तो नित शान्त निराकुल रहता है।।6।।

घटना–दुर्घटना सब जानें पर शान्ति न खण्डित होती है।
यह वीतरागता की महिमा जो उनको मण्डित रखती है।।
सर्वज्ञ वीतरागी जिनवर वे नहीं किसी से जुड़ते हैं।
बस अपने में ही रहते हैं बस अपने में ही रहते हैं।।7।।

वे भरतराज कुछ देर शान्त ऐसे ही कहते रहते हैं।
कुछ देर शान्त बैठे रहते फिर इकदम कहने लगते हैं।।
अब चलो सभी हम मिलजुलकर आयुधशाला में चलते हैं।
अर चक्ररत्न का यथायोग्य विधिपूर्वक स्वागत करते हैं।।8।।

फिर भरतक्षेत्र के छह खण्डों के नृपगण को अपनाने की।
तैयारी करते हैं मिलकर दिग्विजय यात्रा करने की।।
मन्त्रीगण अर सेनापति मिल सब तैयारी में जुट जावें।
और बनावें कार्यक्रम फिर हमें सभी कुछ बतलावें।।9।।

शुभ मुहूर्त्त में निकलें हम दिग्विजय यात्रा करने को।
सबसे पहले पूर्व दिशा की ओर हमें जाना होगा।।
श्री गंगातट पर बसे हुये राजाओं से मिलना होगा।
विजय यात्रा का मकसद उन सबको समझाना होगा।।10।।

यह भरतक्षेत्र प्राकृतिकरूप से छह खण्डों में बँटा हुआ।
फिर खण्डों के भी खण्ड–खण्ड कर दिये अनेकों नृपगण ने।।
सबको अखण्ड करना होगा इस भरतक्षेत्र की गरिमा को।
इस भरतक्षेत्र के गौरव को इस भरतक्षेत्र की महिमा को।।11।।

खण्ड–खण्ड में बँटे हुये ये सब छोटे–छोटे नृपगण।
आपस में लड़ते रहते हैं बिन कारण ये छोटे नृपगण।।
इन झगड़ों से मतभेदों से खण्डित होता है यह भारत।
हो गये यदी हम सब अखण्ड तो मण्डित होगा यह भारत।।12।।

अर विकास के काम नहीं हो पाते हैं इन खण्डों में।
गंगा जैसी बड़ी नदी बँट जाती कई भूखण्डों में।।
उसका बँटवारा करने को सब राज्य झगड़ते रहते हैं।
इन नदियों पर फिर बड़े–बड़े रे बाँध नहीं बन सकते हैं।।13।।

इन बाँधों के बिना सिंचाई कैसे होगी खेतों की।
अरे सिंचाई बिना जुताई कैसे होगी खेतों की।।
फिर अनाज का उत्पादन भी कैसे होगा खेतों में।
फिर विकास के काम भला कैसे हो पावें भारत में।।14।।

(क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शुक्रवार, 24 फरवरी 2023

प्रातः – 06.30 से डॉ. भारिल्ल के अरिहंत चैनल पर प्रवचन प्रसारण।
07.00 से श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं श्री द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान।
09.00 से ध्वजारोहण एवं उद्घाटन समारोह।
09.30 से प्रवचन – डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली।
10.30 से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन प्रसारण एवं मुख्यबिन्दु।
दोपहर – 02.00 से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सी.डी प्रवचन।
02.30 से महाविद्यालय के छात्रों द्वारा शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता।
सायं – 06.30 से श्री जिनेन्द्र भक्ति एवं आध्यात्मिक पाठ।
07.00 से प्रथम प्रवचन – डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली।
07.45 से द्वितीय प्रवचन – तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर।
08.30 से **श्री संजीवजी उस्मानपुर द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या।**

शनिवार, 25 फरवरी 2023

प्रातः – 06.30 से डॉ. भारिल्ल के अरिहंत चैनल पर प्रवचन प्रसारण।
07.00 से श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं श्री योगसार महामण्डल विधान।
09.00 से प्रवचन – डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ।
10.00 से गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचन प्रसारण एवं मुख्यबिन्दु।
दोपहर – 02.30 से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सी.डी प्रवचन।
03.00 से महाविद्यालय के स्नातकों द्वारा द्रव्यसंग्रह विषय पर गोष्ठी।
सायं – 07.00 से श्री जिनेन्द्र भक्ति एवं आध्यात्मिक पाठ।
07.45 से प्रथम प्रवचन – डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ।
08.30 से द्वितीय प्रवचन – तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर।
09.15 से **भरत का अन्तर्द्वन्द्व नृत्यनाटिका की विशेष प्रस्तुति।**
09.30 से **वैराग्य नाटक का मंचन**

रविवार, 26 फरवरी 2023

प्रातः – 06.30 से डॉ. भारिल्ल के अरिहंत चैनल पर प्रवचन प्रसारण।
07.00 से श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं पूजन।
09.00 से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार विषय पर प्रवचन का प्रसारण एवं महाविद्यालय के छात्रों द्वारा मुख्यबिन्दु प्रस्तुति।
10.00 से **भव्य शोभायात्रा एवं महामस्तकाभिषेक।**
दोपहर – 03.30 से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सी.डी प्रवचन।
04.00 से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन प्रसारण।
सायं – 07.00 से श्री जिनेन्द्र भक्ति एवं आध्यात्मिक पाठ।
07.45 से परमागम ऑनर्स का वार्षिक विशेष कार्यक्रम।

(पृष्ठ 2 का शेष...)

क्या पैमाना है?

यदि तुझे यह सुनिश्चित करना है कि तेरा काम हो ही हो, तब यह सब जानना और समझना तो जरूरी है ना!

एक बात तो बतला!

जब तू भगवान के दर्शन कर रहा होता है और मन में किसी वस्तु-विशेष की चाहत होती है तब तेरे मष्तिष्क में भगवान होते हैं या वह वस्तु?

यदि इच्छित वस्तु ही तेरे दिमाग में है तब यह भगवान की भक्ति कैसे कहलायेगी, तेरा ध्यान भगवान का ध्यान कैसे कहलायेगा? वह तो उस वस्तु का ध्यान है जिसकी तुझे चाहत है। फिर तुझे मात्र भगवान से ही सरोकार कहाँ है, तू तो हर उस शख्स के सामने अपना मत्था टेकने को तैयार है जो तेरी अभिलाषा पूरी करने का (झूठा ही सही) आश्वासन दे। इस तरह तू तो मात्र अपनी चाहत-पूर्ति का अभिलाषी हुआ, भगवान का भक्त नहीं।

फिर क्यों अपने को भ्रम में रखता है और दूसरों को भ्रम में डालता है? अपने हृदय को टटोल और सत्य का साक्षात्कार कर, तेरा कल्याण होगा ●

श्रद्धासुमन समर्पित

किशनगढ़ निवासी श्रीमती **पताशी देवीजी चौधरी का** दिनांक 30 जनवरी 2023 को पंचपरमेष्ठी के स्मरण पूर्वक शान्त परिणाम से देह-वियोग हो गया।

आप तत्त्वज्ञानी महिला थीं एवं जीवन के अन्तिम क्षण तक तत्त्वज्ञान के जुड़ी रहीं। आपने अपने पूरे परिवार को भी तत्त्वज्ञान के संस्कारों से संस्कारित किया। आप जैनदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की दादीसास एवं श्रेष्ठीवर्य श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़ की माताश्री थीं। आपकी स्मृति में 11,000 रुपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

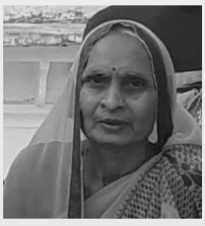

कोटा निवासी **श्रीमती मुन्नी देवीजी** का दिनांक 11 फरवरी 2023 को देव-शास्त्र-गुरु के स्मरण पूर्वक देहावसान हो गया है।

आप सरल स्वभावी, सदैव प्रसन्न रहने वाली महिला थीं। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, कोटा की माताश्री थीं।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर में...

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों के अधिकारी विद्वान बन ते हैं - इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक एक हजार से अधिक छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री , पण्डित संयमजी शास्त्री आदि विद्वानों का सान्निध्य छात्रों को निरंतर प्राप्त होता है।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो **B.A.** के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा कैट, नेट (J.R.F.) जैसी सर्वमान्य परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम होता है।

छात्रों के आवास व भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

नया सत्र जुलाई 2023 से प्रारंभ होगा; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें। यदि दसवीं का परीक्षाफल उपलब्ध न हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

विशेष ध्यान रहे कि महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने की प्रक्रिया ग्वालियर मध्यप्रदेश में आयोजित होने वाले वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर में होगी, जो कि 21 मई से 07 जून 2023 तक सम्पन्न होगा। प्रवेशार्थी छात्र को शिविर में उपस्थित होना अनिवार्य होगा। **- डॉ. शान्तिकुमार पाटील (प्राचार्य)**

समयसार प्रश्नोत्तरी तैयार

कहान-समयसार-सम्प्राप्ति वर्ष के अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में संचालित समयसार वर्ष के अन्तर्गत आचार्य कुन्दकुन्ददेव कृत **ग्रन्थाधिराज समयसार** पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित **'ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका'** के आधार से **सर्वोदय समयसार प्रश्नोत्तरी** तैयार की गई है, जिसमें समयसार की विषय-वस्तु के आधार से लगभग 1100 प्रश्न क्रमशः हैं। प्रश्नोत्तरी मँगाने हेतु 9509232733 पर अपना पूरा पता एवं प्रतियों की संख्या भेजें। जमा कराने की तिथि 30 सितम्बर 2023 है।

पुस्तक की राशि - 30/- + कोरियर चार्ज

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2023

प्रति,